● **सुनो, पढ़ो और गाओ :**

१३. धन्यवाद

– शिवमंगल सिंह 'सुमन'

जन्म : ५ अगस्त १९१५, झगरपुर ग्राम (उ.प्र.) **मृत्यु :** २७ नवंबर २००२ **रचनाएँ :** हिल्लोल, मिट्टी की बारात, वाणी की व्यथा, प्रलय सृजन, युग का मोल **परिचय :** शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी कुशल प्रशासक, प्रखर चिंतक, विचारक और हिंदी के शीर्ष कवियों में एक हैं। प्रस्तुत रचना के माध्यम से कवि सुमन जी ने हमें उपकार करने वालों, स्नेहियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया है।

बताओ तो सही

अपने घर के किसी प्रिय सदस्य पर कविता लिखकर सुनाओ।

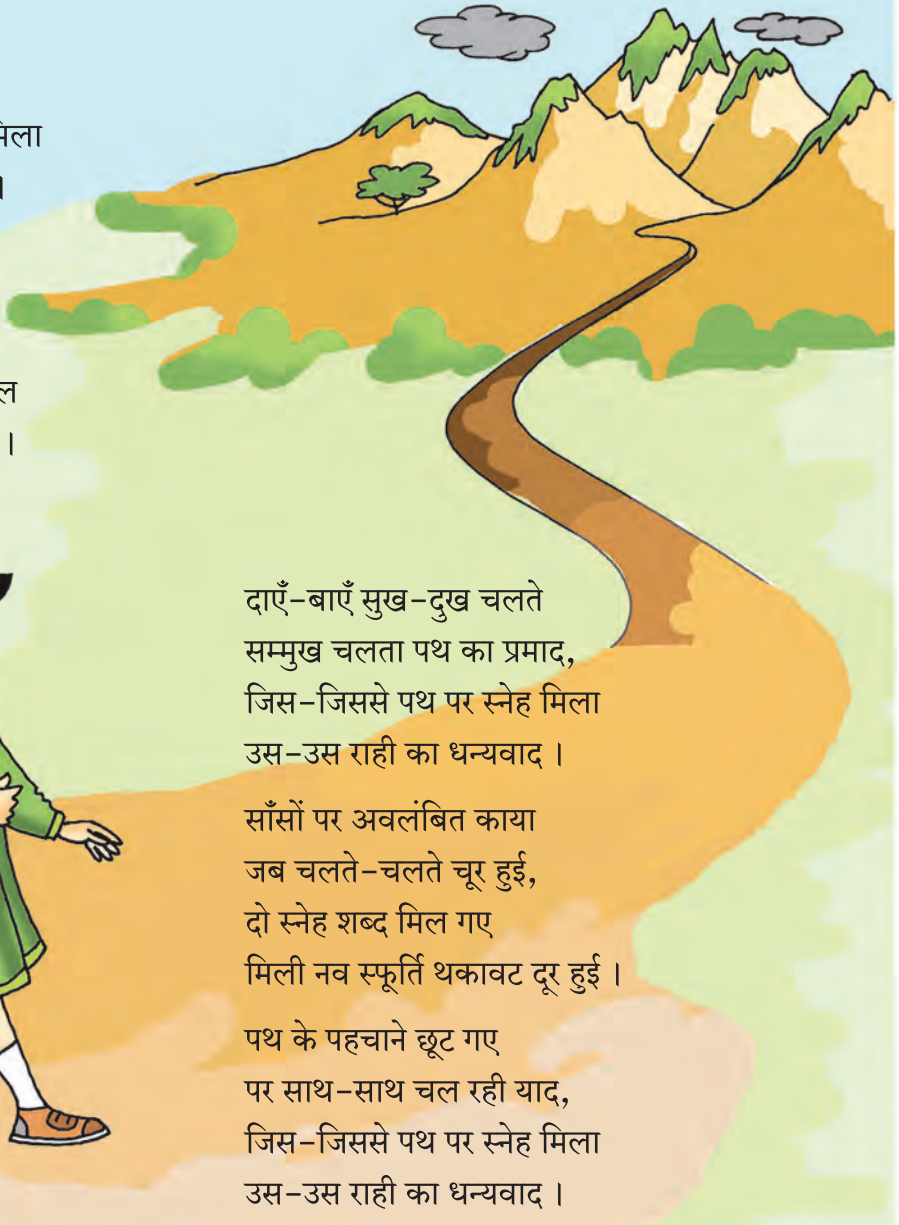

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद।

जीवन अस्थिर अनजाने ही
हो जाता पथ पर मेल कहीं,
सीमित पग-डग, लंबी मंजिल
तय कर लेना कुछ खेल नहीं।

दाएँ-बाएँ सुख-दुख चलते
सम्मुख चलता पथ का प्रमाद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद।

साँसों पर अवलंबित काया
जब चलते-चलते चूर हुई,
दो स्नेह शब्द मिल गए
मिली नव स्फूर्ति थकावट दूर हुई।

पथ के पहचाने छूट गए
पर साथ-साथ चल रही याद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें। विद्यार्थियों से साभिनय, सामूहिक, गुट में, एकल पाठ करवाएँ। प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता में आए भावों को स्पष्ट करें। कविता में आए उपसर्ग/प्रत्ययवाले शब्दों से इन्हें अलग कराएँ।

अध्ययन कौशल

किसी शालेय कार्यक्रम का नियोजन करते हुए कार्यक्रम पत्रिका बनाओ ।

जो साथ न मेरा दे पाए
उनसे कब सूनी हुई डगर,
मैं भी न चलूँ यदि तो भी क्या
राही मर लेकिन राह अमर ।

इस पथ पर वे ही चलते हैं
जो चलने का पा गए स्वाद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद ।

कैसे चल पाता यदि न मिला
होता मुझको आकुल अंतर,
कैसे चल पाता यदि मिलते
चिर तृप्ति अमरता पूर्ण प्रहर ।

आभारी हूँ मैं उन सबका
दे गए व्यथा का जो प्रसाद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद ।

❑ विद्यार्थियों को किन-किन-से स्नेह मिलता है, बताने के लिए कहें । कब-कब, किन-किन को धन्यवाद करना चाहिए, चर्चा करें। धन्यवाद, मंजिल, थकावट, अमर, व्यथा, प्रसाद शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करके कक्षा में बताने के लिए प्रोत्साहित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

पथ = रास्ता
अस्थिर = चंचल
प्रमाद = भ्रम
सम्मुख = सामने
आकुल = व्याकुल
अंतर = मन, अंतस
व्यथा = कष्ट
राही = यात्री

विचार मंथन

।। वृक्ष करता सब पर उपकार
जग माने उसका आभार ।।

जरा सोचो ..... बताओ

अगर तुम्हारा बचपन ठहर जाए तो ...

सुनो तो जरा

हौसला, प्रेरणा, जीवन संघर्ष में से किसी भी विषय पर कविता सुनो और सुनाओ ।

वाचन जगत से

किसी एक पसंदीदा कविता के आशय का शाब्दिक तथा अंतर्निहित अर्थ का आकलन करते हुए वाचन करो और केंद्रीय भाव लिखो ।

सुनो तो जरा

अपने आसपास में घटी कोई हास्य घटना/प्रसंग सुनाओ ।

खोजबीन

अंतरजाल की सहायता से भारत के अब तक के राष्ट्रपतियों के नाम तथा उनका कार्यकाल ढूँढ़ो और बताओ ।

स्वयं अध्ययन

अब तक पढ़े मुहावरे, कहावतों का वर्णाक्रमानुसार लघु शब्दकोश बनाओ ।

❊ **कविता में निम्न शब्दों से सहसंबंध रखने वाले शब्द खोजकर लिखो :**

(क) सीमित पग-डग –
(ख) दाएँ-बाएँ –
(ग) साथ-साथ –
(घ) आकुल –
(ङ) व्यथा –
(च) राही –
(छ) जीवन –
(ज) पथ –
(झ) सूनी –
(ञ) राह –

सदैव ध्यान में रखो

सच्चा मित्र वही है, जो विपत्ति में काम आए ।

भाषा की ओर

पढ़ो, समझो और करो :
() छोटा कोष्ठक, [] बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक, {} मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक, ^ हंसपद

छोटा कोष्ठक ()
क्रमसूचक अक्षर, अंक, संवादमय लेखों में हावभाव सूचित करने के लिए () इसका प्रयोग करते हैं ।

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक{}
एक साधारण पद से संबंध रखने वाले अलग-अलग पंक्तियों के शब्दों को मिलाने के लिए {} इसका प्रयोग करते हैं ।

छोटा कोष्ठक ()

(१) सागर- (**आश्चर्य से**) आप सब मेरा इंतजार कर रहे हैं !
(२) निम्न प्रश्न हल करो :
(अ) ९५ X २६ (ब) ६००÷१५

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक {}

(१) {गोदान, निर्मला, गबन} प्रेमचंद जी के प्रसिद्ध उपन्यास हैं ।
(२) {तुलसीदास, कालिदास} महाकवि माने जाते हैं ।

उचित विराम चिह्न लगाओ :

१. कामायनी महाकाव्य कवि जयशंकर प्रसाद
२. विशाखा लंदन से दिल्ली आती है हवा जैसी आने की सूचना नहीं देती ।
३. बालभारती सुलभभारती हिंदी की पुस्तकें हैं ।
४. किसी दिन हम भी आपके घर आएँगे ।

बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []
लेखन में त्रुटि या पूर्ति बताने, दूसरे कोष्ठक को घेरने के लिए [] इसका प्रयोग करते हैं ।

हंसपद ^
लेखन में जब कोई शब्द छूट जाता है तब उसे पंक्ति के ऊपर लिखकर ^ यह चिह्न लगाते हैं ।

बड़ा (वर्गाकर) कोष्ठक []

(१) रवींद्रनाथ ठाकुर का अनुवादित [अनूदित] साहित्य सब पढ़ते हैं ।
(२) देखो, आपका पत्र [नमूना (ड)] के अनुसार होना चाहिए ।

हंसपद ^

(१) अस्मि ने सुंदर ^ भेंटकार्ड बनाया ।
(२) पिता जी कल मुंबई ^ जाएँगे ।